Open Or Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ. सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

अनुक्रमणिका

1.सीता सहचरी (संत पीपा सहधर्मिणी) का शैक्षिक दर्शन 6

– [1]सुश्री अदिति गौड़ [2]डॉ.मनीषा चोरड़िया 6

2.शान्ति का उत्स वैदिक साहित्य 7

–डॉ.वीरेन्द्र कुमार जोशी 7

3.लिंग–परिवर्तन और भारतीय समाज 10

–सोनम कुमारी 10

4.समय के कठघरे में : कहानियों की कहानी 11

–वाचस्पति त्रिपाठी 11

5.विमल मित्र का कथा साहित्य : मनोविज्ञान और सामाजिक सन्दर्भ 14

–डॉ0 सोमलता वर्मा 14

6.भारत एवं चीन में आधुनिक शिक्षा की स्थिति 17

–डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी 17

7.समकालीन : साहित्यिक परिप्रेक्ष्य 20

–डॉ0 सोमलता वर्मा 20

8.आजादी का अमृत महोत्सवः प्राथमिक आवश्यकताऐं 23

–डा.कुमुद श्रीवास्तव 23

9.लैंगिक समानता और महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण 26

–डा.विनी शर्मा 26

10.हिंदी उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिकता 29

–डॉ.गुलाब राठोड 29

11.द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता की आधार भूमि एवं वैशिष्ट्य 32

–प्रो.अवधेश कुमार 32

12.बहुजन वैचारिकी के प्रतिबद्ध नायक : पेरियार ललई सिंह 35

–मुकेश कुमार यादव 35

13.डॉ.धर्मवीर की आलोचना दृष्टि में कबीर 38

–रवींद्र प्रताप सिंह 38

14.दलित आत्मकथा प्रेरणा और प्रभाव 41

–प्रा.डॉ.अमोल रमेश इंगले 41

15.Poverty Alleviation - An Instrument for Human Resource Development 43

14.दलित आत्मकथा प्रेरणा और प्रभाव

–प्रा.डॉ.अशोक त्र्यंबक इंगले
हिंदी विभागाध्यक्ष, शिवनेरी महाविद्यालय शिरूर आनंतपाल,लातूर.

आधुनिक युग की लोकप्रिय विधा 'आत्मकथा' मानी जाती है। यह एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा है अंग्रेजी के 'ऑटो बइयोग्राफी (Autobiography) को हिंदी में आत्मकथा कहते है। **आत्मकथा की परिभाषा**:-(1)' आत्मकथा लेखक के अपने जीवन का सकद वर्णन है। आत्मकथा के द्वारा अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन महत्त्व दिखलाया जाना संभव है।'1 हिंदी साहित्य कोश (2) 'जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है, तब उसे आत्मकथा कहते है।'2 डॉ. नगेंद्र

मराठी परिभाषा :-3)' आत्मकथा म्हणजे जगलेल, भोगलेल आणि पाहिलेल आयुष्य नव्हे तर आठवणीत साठवलेल आयुष्य असत।'3 रत्नकुमार लिंबाळे। 'आत्मकथा' इस शब्द से ही यह अर्थबोध हो जाता है कि, इसमें लेखक अपने जीवन की भोगी हुई सच्चाई का वर्णन करता है। जन्म से लेकर किसी मुकाम तक पहुँचने तक अपने जीवन अनुभव को वह प्रस्तुत करता है। अपने जीवन में आए अच्छे– बुरे अनुभवों को वह औरों तक पहुंचाने की उसकी एक सहज इच्छा होती है। अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उसने जो कुछ संघर्ष किया है, जो कुछ होगा है, सहा है, मुसीबतों का सामना किया है, वह लक्ष्य तक पहुँचने के बाद पूरी तटस्थता से आप बीती लिखता है। वह जिन मुसीबतों से गुजरा है, ऐसे ही आनेवाली पीढ़ी को गुजरना ना पड़े इसीलिए वह अपनी आत्मकथा लिखता है।

हिंदी में आत्मकथा विधा का आरंभ 1841 में हिंदी के कवि श्री बनारसी दास जैन की पद्य रचना 'अर्द्धकथा' से होता है। यह हिंदी की पहली आत्मकथा मानी जाती है। लेकिन आत्मकथा को एक गद्य विधा के रूप में जो प्रतिष्ठा मिली वह आधुनिक काल में ही मिली है। आधुनिक युग में हिंदी के भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' नाम से आत्मकथा लिखी। श्यामसुंदर दास ने 'मेरी आत्मा कहानी' (1941) नाम से आत्मकथा लिखी। राहुल सांकृत्यायन ने 'मेरी जीवन यात्रा' नामक शीर्षक से तीन खंडों में अपनी आत्मकथा लिखी। सेठ गोविंद दास ने 'आत्मनिरीक्षण' नाम से अपनी आत्मकथा लिखी है। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' जी ने 'अपनी खबर' (1960) नामक शीर्षक से अपनी आत्मकथा लिखी। डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने 'क्या भूलूँ क्या याद करूं' तथा 'नीड़ का निर्माण फिर' इन दो भागों में अपनी लोकप्रिय आत्मकथा लिखी है। सन 1976 के बाद डॉ. बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा के और दो खंड 'बसेरे से दूर' तथा 'दशद्वार से सोपान तक' प्रकाशित किये। लेकिन हिंदी आत्मकथा केवल अपना आत्म परिचय का साधन बनकर रह गयी है।

देश आजादी के पश्चात इस व्यवस्था में से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि से जिनका हजारों सालों से शोषण हो रहा था वह समाज शिक्षा के कारण जागृत हुआ। शिक्षा से जागृत समाज का आत्मभान जाग उठा इसी की बदौलत इनमें स्वत्व की भावना निर्माण हुई। इस शोषण व्यवस्था में शोषित मनुष्य का पक्ष लेकर इस शोषित व्यवस्था का विरोध करते हुए डॉ. बाबासाहब अंबेडकर की प्रेरणा और विचारों से जो साहित्य निर्माण हुआ वह 'दलित साहित्य' है। मराठी भाषा का साहित्य डॉ. आम्बेडकर की प्रेरणा लेकर मनुवादी व्यवस्था का विरोध करते हुए ,उसे नकारते हुए, अपना अस्तित्व ढूंढते हुए जो साहित्य लिखा गया वह शोषित उपेक्षित लोगों का साहित्य है। यह साहित्य समाज परिवर्तन के लिए, सम्यक क्रांति के लिए तथा डॉक्टर बाबासाहब आम्बेडकर जी ने संविधान के जरिए जो हक और अधिकार दिए हैं इन अधिकारों के लिए अपनी कलम उठाकर जिन साहित्यकारों ने जिस साहित्य को जन्म दिया वह साहित्य अर्थात दलित साहित्य है। इस दलित साहित्य में विविध विधाओं में साहित्य लिखा गया। इसमें दलित उपन्यास, दलित कहानी, दलित कविता, दलित नाटक, आम्बेडकरी जलसा जैसे लेखन हो रहा था। डॉ.आम्बेडकर जी की प्रेरणा से जो आत्मकथाएँ लिखी गई जिससे मराठी भाषा में दलित आत्मकथा जैसी विधा का जन्म हुआ। इस दलित आत्मकथाओं से दलित समाज का सच तथा यथार्थ समाज के सामने आया। मराठी भाषा में जो आत्मकथाएँ लिखी गई वह देश भर में ही नहीं तो विदेशों में भी चर्चित रही है। मराठी दलित आत्मकथाएँ जैसे शंकर खरात की 'तराल अंतराल', दया पवार की'बलुत',प्र. ई.सोनकांबळे की' यादों के पंछी', शरण कुमार लिंबाले की 'अक्करमाशी', पार्थ शेळके की 'आभरण', रुस्तम अचलखांब की 'गावकी', उत्तम बंडू तुपे की 'काटों पर के पेट', आर .के. त्रिभुवन की 'दे दान छूटेगा ग्रहण', माधव कोंडाविलकर की 'मुकाम पोस्ट देवों का जमजाना', अशोक व्हटकर कि 'मरा हुआ पानी', नाम शिंदे की 'जाति को जात वैरी', लक्ष्मण माने की 'उपरा', लक्ष्मण गायकवाड़ की 'उठाईगीर', किशोर काले की 'छोरा कोल्हाटे का', यह आत्मकथाएँ अपने जीवन की व्यथा वेदनाओं का, दैन्य दरिद्रता का, शोषण का आलेख सच्चाई के साथ रखते हुए पूरे समाज व्यवस्था की सच्चाई का चित्रण इन आत्मकथाओं द्वारा साकार हुआ है।

मराठी दलित आत्मकथाओं से प्रेरणा लेकर हिंदी में भी करीब–करीब ऐसे ही हुआ। हिंदी दलित आत्मकथाओं में ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' से ही हिंदी में दलित आत्मकथा साहित्य की शुरुआत मानी जा सकती है। इसके पश्चात मोहनदास नैमिशराय की 'अपने अपने पिंजरे' तो कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' पहली स्त्री दलित आत्मकथा मानी जाती है। यह आत्मकथा दलित नारी के जीवन की संघर्ष गाथा प्रस्तुत करती है। डॉ.सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत', माता प्रसाद की 'झोपड़ी से राजभवन तक', डॉ. एम. एम. निमगड की 'धूल का पंछी यादों के पंख', प्रो. श्यामलाल जेंड़िया की 'एक भंगी कुलपति की अनकही कहानी', रमाशंकर आर्य की 'घुटन', श्योराजसिंह बेचैन की 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', डॉ. धर्मवीर की 'मेरी पत्नी और भेड़िया', सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजी का दर्द', डॉ. एम.एल. शहारे की 'यादों के झरोखे', छोटेलाल बौद्ध की 'दलित दंश' आदी।

मराठी, हिंदी साहित्य की आत्मकथाएँ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रेरणा से ही निर्माण हुई है। "बाबासाहब डॉक्टर आम्बेडकर दलित साहित्यकारों के हमेशा प्रेरणा स्त्रोत रहेंगे और उनका चिंतन जिसपर दलित साहित्य की भित्ति खड़ी है, असमानता एवं वर्ण व्यवस्था का निरंतर संहारक रहेगा, जिसका समापन वर्ण विहीन व जाति विहीन समाज रचना ही है।"4 भारतीय समाज व्यवस्था हजारों सालोंसे मनुवादी व्यवस्था से चल रही थी। इस मनुवादी व्यवस्था में शुद्रों अर्थात दलितों को मानवाधिकार से दूर गुलामी की जिंदगी जीने के लिए मजबूर किया था। इन दलितों को आजादी के पश्चात डॉक्टर आम्बेडकर जी की प्रेरणा से भोगी हुई सच्चाई को आत्मकथा के जरिए समाज के सामने लाने की कोशिश की है। दलित साहित्य की आत्मकथाएँ यह प्रतिरोध का साहित्य नहीं है। वह मानव निर्मित समाज व्यवस्था, धर्म व्यवस्था की सच्चाई को निर्भीकता के साथ रखा गया साहित्य है। दलित आत्मकथाओं में चित्रित विचार हमें कभी–कभी झूठे, कुछ भड़कीले, अतिशयोक्ति पूर्ण लगते हैं। किंतु जब उनके जड़ों तक पहुंचते हैं तो पता चलता है कि, इस व्यवस्था ने उनका अमानुष शोषण किया है। इस शोषण के कारण है अज्ञान, दरिद्रता और अंधश्रद्धा। इन्हीं कारणों की वजह से यह समाज संवेदन शून्य बना हुआ था। लेकिन डॉक्टर आम्बेडकर जी की प्रेरणा और आंदोलनों की बदौलत यह शिक्षित बना, गतिमान हुआ और उन पर हुए अन्याय अत्याचार के विरोध में विद्रोह करने लगा। परंपरा से चली आ रही व्यवस्था को नकारते हुए जो उपेक्षित, पीड़ित जीवन जिया है, भोगा है और आज भी भोग रहा है उसी का अविष्कार इन सभी दलित आत्मकथाओं में देखने के लिए मिलता है। दलित आत्मकथाओं ने दलित लेखकों को आत्मकथा लिखने के लिए डॉ. बाबासाहब की वजह से ही बल मिला है। साथ ही इन दलित आत्मकथाओं द्वारा दलित साहित्य को सफलता की ऊंचाई पर ले जाने की ताकत मिली है। मराठी दलित आत्मकथाएँ भारतीय अन्य भाषाओं में अनुवादित हुई है। मराठी दलित आत्मकथाओं की चर्चा भी हो रही है। मराठी दलित आत्मकथाएँ पढ़कर हिंदी तथा अन्य भाषा के लेखकों ने अपना जीवन इस विधा को सामने रखकर लेखन किया है। अर्थात इन दलित आत्मकथाओं के कारण भारत के दलितों की समस्या तथा प्रश्न राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जाने में दलित आत्मकथाओं का बहुत बड़ा योगदान है। इसके पीछे केवल और केवल डॉ. भीमराव आम्बेडकर जी के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है।

दलित आत्मकथा के अनुभव प्रमुखतः जाति विशिष्टता को लेकर है। जाति व्यवस्था के कारण होने वाले अन्य अत्याचारों का, भोगी हुई सच्चाई का, जीवन संघर्ष का विदारक चित्रण इन दलित आत्मकथाओं के द्वारा पढ़ने को मिलता है। दरिद्रता के कारण दलितों की होने वाली उपेक्षा, अपमान यही उनके जिंदगी का सफर है। तो दूसरी ओर भूख और प्यास मिटाने की तीव्रता से संघर्ष दिखाई देता है। साथ ही अंधश्रद्धा, अज्ञान, निरक्षरता, व्यसनाधीनता और कर्मकांड में फंसा आदमी प्रजातंत्र में भी उपेक्षित ही है और उसे उपेक्षित रखने की राजनैतिक तथा सामाजिक स्तर पर पूरी कोशिश की जा रही है। उपेक्षित पीड़ित मनुष्यों को आत्मकथा पढ़ने के बाद आज के मनुष्य को एक जीने के लिए नई प्रेरणा मिलती है। इस जातीय और धर्मांध व्यवस्था से शोषण मुक्त होना है तो केवल राष्ट्रपिता फुले , शाहू महाराज, डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे मानवतावादी विचारों के विचारों को आत्मसात करके ही हो सकता है। इस शोषण व्यवस्था से मुक्त होना है तो उपेक्षित, दलित, पिछड़ोंऔर आदिवासियों को शिक्षा की राह को पकड़ना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:– (1)हिंदी साहित्य कोश–संपा. धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण–2009, पृष्ठ संख्या–77। (2)हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ.नगेंद्र, मयूर पेपर बॉक्स, नोएडा, संस्करण–1973, पृष्ठ संख्या–595। (3)हिंदी दलित आत्मकथाएं–डॉ. साहबराव गायकवाड, अभय प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ संख्या–16। (4)हिंदी दलित साहित्य–मोहनदास नैमिशराय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–137।